पाठ 18. रहीम के दोहे

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ रहीम के नीति परक दोहों का वर्णन कर रहा है। इन दोहों के माध्यम से बच्चों को मीठी वाणी, दूसरों की सहायता, छोटी-बड़ी सभी वस्तुओं की एक समानता तथा मित्रता का मोल तथा महत्व का ज्ञान होगा।

पाठ का सारांश

रहीम जी के इन दोहों के माध्यम से लोगों को मधुर वाणी, परोपकार, सभी को समान समझना, मित्रता निभाना जैसे मानवीय गुणों की सीख दी जा रही है।

अध्यापन संकेत

बच्चों से एक-एक दोहे का वाचन करवाएँ। प्रत्येक दोहे का अर्थ समझाएँ–

- **रहिमन पानी .... मानस चून।**
  रहीम दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार पानी के बिना आटे का अस्तित्व नहीं और मोती का मूल्य उसकी चमक के बिना नहीं, उसी प्रकार मनुष्य का सम्मान बिना विनम्रता के नहीं होता। इसलिए मनुष्य को सदैव विनम्र होना चाहिए।
- **बिगरी बात .... माखन होय।।**
  यदि कोई बात बिगड़ जाए या बिगड़ गई हो तो उस पर बार-बार चर्चा या बहस करने से कोई समाधान नहीं निकलता अपितु स्थितियाँ और खराब हो सकती हैं। जिस प्रकार फटे दूध को कितना ही मथा जाए उसमें से मक्खन प्राप्त नहीं होता।
- **रहिमन वे .... नाहिं।।**
  रहीम जी कहते हैं कि जो लोग दूसरों से कुछ माँगते रहते हैं या कुछ माँगने के लिए जाते हैं, उन लोगों की आत्मा तो पहले ही मर चुकी होती है पर उनसे पहले उन लोगों की आत्मा, मानवीयता मर जाती है, जो उन्हें कुछ देते ही नहीं अथवा कुछ देने के नाम पर वे चुप्पी साध लेते हैं।
- चौथे दोहे में मित्रता का महत्व बताया गया है। बच्चों को समझाएँ कि जो व्यक्ति दूसरों की सहायता करते हैं, उनका हित चाहते हैं उनसे अधिक धनी और कोई नहीं होता।
- पाँचवे दोहे में छोटी-बड़ी सभी वस्तुओं के महत्व की बात कही गई है।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।